International Journal of Education and Science Research Review
ISSN 2348-6457
Volume-2, Issue-1
February- 2015
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

महात्मा गाँधी जी और प्राथमिक शिक्षा

Renu Gupta
Research Scholar
Sunrise University, Alawar, Rajasthan

गाँधी उस समय की भारतीय शिक्षा पद्वति से अत्यंत असन्तुष्ट थे। उन्हाने इसकी विभिन्न सभाओं में तथा विभिन्न प्रकार से आलोचना की उन्होनें 1937 में वार्धा में स्थित मारवाडी हाई स्कूल ने अपनी रजत जयन्ती मनानी थी। उन्होने 1937 में भारतीय शिक्षा के पुनर्निर्माण का प्रयास किया तथा इस संबध मे अपनी पत्रिका ''हरिजन'' मे कई लेख लिखे।

मारवाडी हाई स्कूल के संचालन का दायित्व मारवाडी शिक्षा सोसायटी पर था। स्कूल के आचार्य श्रीमन नारायण अग्रवाल ने सोसायटी के अध्यक्ष सेठ जमुनालाल बजाज को सुझाव दिया कि इस अवसर पर दो दिवसीय शिक्षा सम्मेलन आयोजित किया जाये। और गााधी जी को सभापति पद के लिये आमान्त्रित किया जाये । सेठ जमुनालाल इस मत से तुरन्त सहमत हा गयें। गॉधीजी ने भी यह निमन्त्रण स्वीकार किया।

यह सम्मेलन 22से 23 अक्टुबर 1937 को वारधा के नवभारत विद्यालय में सम्पन्न हुआ। अपने उद्घाटन भाषण के प्रारम्भ मे ही गॉधीजी ने कहा–राष्ट्रीय शिक्षा संबधी अपने जिन विचारों को हरिजन के माध्यम से मैने समय समय पर व्यक्त किया है मै उन्ही विचारों को आपके सम्मुख रखूगॉ । मै स्वस्थ आलोचना का स्वागत करता हूँ। उन्होने जानबूझकर प्राथमिक शिक्षा पर ऐसी शिक्षा है। जो हमारी ग्रामीण जनता के एक छोटे से भाग को उपलब्ध है, मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि हम ग्रामीण जीवन को सुधारना चाहे तो हमें माध्यमिक शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा से सबद्व करना चाहिए। हम देशवासियों के सम्मुख जो भी शिक्षा योजना प्रस्तुत करें वह मूलतः ग्रामवासियों के लिए ही होनी चाहिए।''

उस समय प्रचलित शिक्षा पद्वति की आलोचना करते हुये गॉधीजी ने कहा, ''वर्तमान शिक्षा पद्वति अपव्ययात्मक होने के साथ हानिकारक भी हो इसे प्राप्त करने के पश्चात अधिकांश लडके अपने माता पिता तथा अपने पैतृक व्यवसाय से दूर हो जाते है। वे शहरी जीवन के तौर तरीके तथा विभिन्न बुरी आदतें सीख लेते है। उनकी रटी–रटाई जानकारी वस्तुतः शिक्षा नही है। प्राथमिक शिक्षा संबधी अपनी योजना प्रस्तुत करते हुये गॉधीजी ने कहा ''मैं चाहता हूँ कि सम्पूर्ण शिक्षा किसी हस्तकला तथा उधोग के माध्यम से दी जाये।''

मेरा मत है। कि प्राथमिक शिक्षा तकली पर आधारित हो । पहले वर्ष में सभी कुछ तकली के माध्यम से सिखाया जाना चाहिए। दूसरे वर्ष में उसके अतिरिक्त अन्य क्रियाये भी सिखलाई जा सकती है..... मैने एक सात वर्षीय शिक्षा योजना निर्मित की है जिसके अन्तर्गत कतली संबधी क्रियाओ के माध्यम से बुनाई, रंगाई तथा डिजाईन आदि संबधी व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

गॉधीजी ने कहा कि प्राथमिक शिक्षा संबधी उनकी योजना प्रतिबन्ध उन्मुखी नही है।स्मरण रहे कि इस प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत स्वच्छता स्वास्थ विज्ञान,आहार संबधी मूल सिद्वान्त, अपना कार्य स्वयं करना, घर पर माता पिता की सहायता करना आदि सम्मलित होगें। आज की पीढ़ी के बालक दुर्बल है।

वित्त संबधी क्रियाओं के विषय में गॉधीजी अत्यन्त स्पष्ट विचार थे। ''यदि बालक अपने श्रम द्वारा अपनी शिक्षा संबधी व्यय जुटाये तो वे आत्मविश्वास तथा साहसी बनेगें। प्राथमिक शिक्षा जितनी अधिक स्वयं पोषित होगी उसकी साधकता भी उतनी अधिक होगी। सात वर्षो के अन्त में बच्चे न केवल अपनी शिक्षा संबधी व्यय स्वयं जुटा सकेगें। अपितु वे कमाई भी कर सकेंगें। अपने भाषण के अन्त मे गॉधीजी ने स्पष्ट किया कि प्राथमिक शिक्षा की यूरोपीय, अमरीकी, तथा रूसी पद्वति हमारे लिये

अनुपयुक्त है। क्योंकि वे सभी शोषण पर आधारित है। उन्होने कहा कि ''हमें अपने बच्चों को अपनी सभ्यता,अपनी संस्कृति तथा अपनी राष्ट्रीयता की सही प्रकृति कि प्रतिनिधि बनाना है।
इसके लिए हमारे पास अहिसा पर आधारित इस शिक्षा योजना के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं है।
इस चर्चा में भाग लेने वाले प्रमुख सदस्य थे डॉ0 जाकिर हुसैन,प्रो0 अब्दुल हक, श्रीमती सौदामिनी मेहता, प्रो0टी के शाह डॉ0 भागवत, डॉ0 सैय्यद अहमद, आचार्य बिनोबा भावे, आचार्य काका कालेल्कर, श्रीमति आशादेवी, पं. रवि शंकर शुक्ल, श्री. बी.जी खैर, आचार्य देव शर्मा, मोलवी मोहम्मद हूसैन, श्री महादेव देसाई, श्री के. जी. सैयदेन।
इसके उपरांत इस ऐतिहासिक सम्मेलन मे निम्न चार प्रस्ताव पारित किये ।
1. इस सम्मेलन के मतानुसार राष्ट्र स्तर पर सात वर्षीय निःशुल्क अनिवार्य शिक्षा आयोजित कि जाए।
2. मातृ भाषा ही शिक्षा का माध्यम होनी चाहिए।
3. यह सम्मेलन गॉधीजी द्वारा प्रस्तुत सुझाव का समर्थन करता है। इन सात वर्षो में शिक्षा प्रक्रिया किसी शारीरिक तथा उत्पादनात्मककार्य पर आधारित होनी चाहिए।बच्चों की अन्य योग्यताओं का विकास अथवा प्रशिक्षण यथा सम्भव बालकों के परिवेश से सम्बन्धित हो, तथा
4. इस सम्मेलन को आशा है यह शिक्षा योजना कालान्तर में अध्यापकों के पारिश्रमिक स्वयं पहन करने में समर्थ हो सकेगी।

निष्कर्ष :–

प्रो0 शाह ने उनमें से स्वयं पोषित शिक्षा योजना के प्रस्ताव का प्रस्ताव का असमर्थन किया। अन्य सभी प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किये गये। यही समिति बाद में डॉ. जाकिर हुसैन समिति के नाम से प्रसद्वि हूई । श्री आर्य नायकम इस समिति के संयोजक थे।

संदर्भः–

1. एन. आर. स्वरूप सेक्सेना(2010)शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्वातं आर.लाल पब्लिकेशन्स
,मेरठ
2. एच. एस. शर्मा (2010) राधा प्रकाशन मन्दिर ,आगरा।